29 / 10 / 81 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

हर समय बाप-दादा द्वारा ज्ञान-विज्ञान द्वारा, नया श्रृंगार करने का अनुभव

➢➢ ज्ञान के अखुट खजानो के सौदागर के साथ मिलन मनाने का अनुभव

➳ _ ➳ अविनाशी ज्ञान रत्नों से श्रृंगार करने वाले ज्ञान सागर प्रियतम से मिलने की इच्छा मन में जागृत होती है

→देह और देह के सर्व संबंधों को तोड लिया

→ निर्बंधन बन, ज्ञान की पालकी में बैठ

■ मैं आत्मा सजनी ज्ञान रत्नों का सोलह श्रृंगार कर चल पड़ती हूँ अपने शिव प्रीतम के पास

➳ _ ➳ उनका प्यार मुझे अपनी ओर खींच रहा है

→ उनके प्रेम की डोर में बंधी मैं उनकी ओर खिंचती चली जा रही हूँ

■ मैं आत्मा सजनी सेकंड में इस साकार वतन और सूक्ष्म वतन को पार कर पहुंच जाती हूं परमधाम अपने शिव साजन के पास

→ वह अपनी किरणों रूपी बाहें फैलाए मेरा ही इंतजार कर रहे हैं

→ उनके प्यार की किरणों रूपी बाहों में मैं समा जाती हूँ

■ उनके निःस्वार्थ और निश्छल प्यार से स्वयं को भरपूर कर, तृप्त होकर मैं आ जाती हूँ सूक्ष्म लोक

➢➢ फरिश्ता स्वरूप स्थिती का अनुभव

➳ _ ➳ लाइट का फरिश्ता स्वरूप धारण किया

→ पहुंच जाती हूँ अव्यक्त बापदादा के सामने

→ अव्यक्त बापदादा की आवाज मेरे कानों में स्पष्ट सुनाई दे रही है

■ हे आत्मा सजनी आओ , "ज्ञान रत्नों का श्रृंगार करने के लिए मेरे पास आओ"

➳ _ ➳ बाप दादा की आवाज सुनकर मैं फ़रिशता उनके पास पहुंचती हूँ

→ बाबा अपने पास बिठाकर बड़ी प्यार भरी नजरों से मुझे निहारने लगते हैं

→ और अपनी सर्व शक्तियों रूपी रंग बिरंगी किरणों से मुझे भरपूर करने लगते हैं

■ सर्वशक्तियों से मुझे भरपूर करके बाबा अब मुझे एक बहुत बड़े हॉल के पास ले आते हैं

➳ _ ➳ वहाँ अमूल्य हीरे जवाहरात, मोती, रत्न आदि बिखरे पड़े हैं

➳ _ ➳ उस पर कोई भी ताला चाबी नहीं है

■ उनकी चमक और सुंदरता को देखकर मैं आकर्षित होकर उस हॉल के बिल्कुल नजदीक पहुंच जाती हूँ

➳ _ ➳ बाबा मुझे उस हॉल के अंदर ले जाते हैं

➳ _ ➳ इन अविनाशी रत्नों से मुझे श्रृंगार करना लगता है

→ गले मे दिव्य गुणों का हार

→ हाथों में मर्यादाओं के कंगन

→ बाबा मुझे सर्व ख़ज़ानों से भरपूर करने लगते है

■ सुख, शांति, पवित्रता, शक्ति और गुणों से अब मैं फ़रिशता स्वयं को भरपूर अनुभव कर रही हूँ

■ बाबा ने मुझे ज्ञान रत्नों के खजानों से मालामाल करके सम्पत्तिवान बना दिया है

■ ज्ञान रत्नों के श्रृंगार से अब मैं आत्मा सदा सजी हुई रहूँगी और मुख से सदैव ज्ञान रत्न ही निकालूंगी

■ अपनी फ़रिशता ड्रेस को उतार अब धीरे-धीरे मैं आत्मा वापिस इस देह में अवतरित हो गयी हूँ

➢➢ सदा उत्साह में रहने का और औरों को भी उत्साह दिलाने का अनुभव

➳ _ ➳ अब से हर घड़ी नई है

→ नया-नया श्रृंगार, नया उमंग और विशेष खुशी का दिन

→ हर दिन सर्व को बधाई देने का है

→ सर्व का सदा के लिए मुख मीठा करने का है

→ मीठे बाप की स्मृति दिलाना है

→ सम्बन्ध में लाना है

■ अब से रोज नया वर्ष हो गया। नये वस्त्र, नया श्रृंगार, नया उत्सव अर्थात् उत्साह और सदा मुख मीठा।